सादर प्रकाशनार्थ

–: संस्कारो से विमुख होती भावी पीढी :–

मुनि जयंत कुमार

एक गांव में घर की दूसरी मंजिल पर बने कमरे में खड+ा था। गांव का निरव वातावरण मन को असीम शांति से सराबोर कर रहा था। इस शांति ने मुझे गांव की ओर आकर्षित किया। लगा आज गांवो में भारत की प्राचीन छवी को देख सकते हैं। यहां की जीवन शैली में देश की आध्यात्म परम्परा जागृत है, देश की खातिर कुछ कर गुजरने का जज्बा हैं। ऐसे ही विचारों में खोया हुआ था कि एक शब्दावली ने मुझे चकित कर दिया। पास ही के एक झोपडी नुमा घर में मां की डांट पर छोटे बालक के मुहं से निकलने वाली वो शब्दावली थी '' राम नाम सत हे थारो बेटो अठे कोनी बठे है''। इस तरह के बोल एक बच्चे के मुहं से निकलना और वो भी गांव के बालक के मुहं से, जहां पर न ऐशो आराम है, न बिगडेल वातावरण हैं। फिर इन बच्चो में क्यों माता–पिता के प्रति विद्रोह की भावना पैदा हो जाती हैं \ क्यों बचपन में ही गाली गलोच और निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग करने लग जाते हैं \ इतना तो शुक्र है कि गांवो के बच्चे हद पार नहीं करते, पर शहरी वातावरण में रहने वाले बालक गोली से उडाने की धमकी तक दे देते हैं। विदेशों के स्कूलो में तो ऐसी घटनाएं घट चुकी हैं। छोटी सी उम्र में हिंसा के संस्कार, गोली की भाषा, यह कहां तक उचित हैं \

इन प्रश्नों के समाधान हेतु मस्तिष्क में मंथन प्रारंभ हो गया। जो मन कुछ समय पहले शांति के हिलोरे ले रहा था, वही मन संस्कारों से विमुख होती भावी पीढी के लिए तडप उठा। अनेक पहलुओं पर समग्र दृष्टियों से मंथन करने के बाद इन बिन्दुओं पर ध्यान गया।

शिक्षा का अभाव :– भारत सरकार शिक्षा के लिए जागरूक है। पर सरकारी कार्य कितने जमीनी होते हैं, यह प्रश्न उठना स्वभाविक है। इसका अहसास हमने गांवो की पदयात्रा में किया। हमनें ऐसे अनेक गांव देखे जहां वि|ालय केवल पोषाहार तक सीमित हो गये हैं। कुछ वि|ालयों में शिक्षा पर ध्यान तो दिया जाता है पर उन वि|ालयों में 60 प्रतिशत बच्चे ही पहुंच पाते हैं। यह एक कमजोर कडी है। इस कमी के साथ एक महत्वपूर्ण कमी पर ध्यान गया, वो है शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक समेट दिया गया है। उसमें संस्कार निर्माण पर दृष्टिपात ही नहीं हो रहा है। प्राचीन परम्परा में शिक्षा के साथ सद्संस्कारो का बिजारोपण किया जाता था। आज अपेक्षा हैं गांवों में बसने वाले बच्चों के अभिभावकों में शिक्षा एवं संस्कारों के प्रति जागरूकता पैदा की जाये और शिक्षा में सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाये।

टेलिविजन की पहुंच :– गांवो में रहने वाले ऐसे अनेक परिवार देखने को मिले जिनके पास रहने को पक्का मकान नहीं है, और पहनने को साफ सुथरे कपडे नहीं है, पर उनके घरो में टेलिविजन जरूर हैं। आज टेलीविजन छोटे से छोटे गांव में, ढाणी में, पहुंच गया हैं। गरीब परिवार भी इसके बिना नहीं रह सकता। वैसे टेलीविजन के बहुत से फायदे हैं। इसके द्वारा विश्व की खबरों पर नजर रखी जा सकती है। पर कुछ चैनलो पर ऐसी सामग्री परोसी जाती है, जिससे बालमन पर हिंसा, अपराध और सेक्स हावी होने लगता है। अगर इन पर सेंसर लगें और मीडिया वाले अहिंसात्मक दृश्य भी दिखाये तो टेलीविजन विकास में

महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, अन्यथा संस्कार हनन का कारण बन रहा हैं। इसके कारण न केवल गांवो के बच्चे बल्कि शहरों, महानगरों में बसने वाले सभ्रांत परिवारों के बच्चे भी संस्कारो से विमुख हो रहें हें ।

उच्च वातावरण न मिलना :– आदिवासी लोगों में धुम्रपान आम बात है। बालक इन दृश्यो में डुबे रहते हैं तो बच्चो को इस ओर बढने से कैसे रोका जा सकता हैं। बालक इन दृश्यों को प्रतिदिन देखता है, अपने दोस्तो से इस विषय पर चर्चा करता हैं। दोस्तो को भी अगर ऐसे दृश्य देखने को मिले है तो उनके मन में नशीले पदार्थों का सेवन करने की इच्छा पैदा हो जाती हैं। एक से ज्यादा का जब किसी वस्तु के प्रति समर्थन मिल जाता है तो उसको प्रयोग में लेने से हिच्च किच्च नहीं रहती है। वर्तमान में तो जो भी महानगर मे रहता है, पुंजीपती है, ऐसे ही ऐयाश लोगों के साथ उठ बैठ है, तो वहां पर शराब का सेवन प्रतिष्ठा का सवाल हो जाता हैं। ऐसी स्थिति में भावी पीढी को बचाकर रखना बहुत कठिन हैं।

इन कारणों के अलावा एकल परिवार की बढती प्रथा भी इसमें योगभूत बन रहीं हैं। शहरों में अभिभावकों के पास बच्चों के लिये समय नहीं होता हैं। आया के भरोसे पलने वाले बच्चे संस्कारी बन सके, इसमें प्रश्न चिन्ह लगा हुआ हैं। बच्चों पर पढाई का वजन भी बहुत ज्यादा रहता हैं वे भी अपने दादा, दादी के पास बैठ नहीं पाते है, यह भी एक कारण है। होस्टलो में रहने वाले बच्चे तो अपने साथियों के भरोसे होते हैं। उनके भीतर कैसे संस्कार पनप रहे हैं, इन सबसे अभिभावक अनजान रहते हैं। आज ईन्टरनेट , मोबाईल भी संस्कारों के हनन का कारण बन गयें हैं। यह सुविधाएं प्रदान करते हैं, पर अतिरिक्त उपयोग से इनके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं।

vkxe euh"kh eqfu nqygjktth dh pkj iqLrdksa dk foekspu
vkxeksa esa Hkjk gS Kku dk v[kV [ktkuk&vkpk;Z egkJe.k

ykMuwa 2 tqykbZ 2011&

vkpk;Z Jh egkJe.k us dgk fd vkxeksa esa Kku dk v[kV [ktkuk gSA vkxeksa esa Kku vkSj oSjkX;e;h ckrsa gSa ftuds }kjk eksg dh psruk dks detksj fd;k tk ldrk gS vkSj viuh vkRek veksg dh fn'kk esa vkxs c<+k;k tk ldrk gSA mDr fopkj mUgksaus vkxe euh"kh eqfu nqygjktth dh d`fr;ksa ^^vkxe lEikfnu dh ;k=k**] ^^tSu /keZ % ,d ifjp;**] ^^bUVksMsDlu vkWQ tSfuTe** ,oa fp=yss[kk¼mi U;kl½ ds foekspu volj ij O;Dr fd;sA

vkpk;ZJh us dgk fd vkxe euh"kh eqfuJh nqygjktth Lokeh gekjs /keZlka?k ds fo}n~ojs.; lar FksA mUgksaus vkpk;Z Jh rqylh ds ikl nh{kk xzg.k dh rc 'kkfn'kk FksA cMh voLFkk esa nhf{kr gq, ijUrq vxzth dk vPNk Kku FkkA mudk vkpk;Z Jh egkiz K dk ikjEHk ls gh fudV lkfUu/; feykA [kqn dh ifrHkk Fkh vkSj bruh yxu ds lkFk 'kfDr dk mi;ksx fd;kA muds tSls O;fDr feyuk eqf'dy gSA lLd`r] izkd`r dk Kku gksus ds lkFk mUgksaus /keZlka?k ds fy, fdruk fdruk dke fd;kA eqfuJh dh iqLrd ^^vkxe lEikfnu dh ;k=k** esa vkxe lEikfnu dk dk;Z fdl rjg vkxs c<+k blds tkudkjh lekfgr gS] tks viuk vki esa egRoiw.kZ gSA vkpk;ZJh us iqLrdksa dks u;s dyoj ds lkFk iLrqr djus esa Je fu;kftr djus okys eqfu jktsUnzdqekj ,oa eqfu ftrsUnzdqekj dh ljkguk djrs gq, dgk fd orZeku lanHkZ esa fo}ku lrksa esa eqfuJh jktsUnzdqekjth Lokeh dk eq[; uke gSA bruh cMh O;kdj.k ^^fHk{kq 'kCnkuq'kklu** vkSj }kjk lEikfnr gS] ftlds esus lkf/o;ks dks i<+kus esa dke fy;kA vkiuh vkpk;ZJh egkiz K dh Hkh cgqr fu"Bk ls lok dhA vc esjh lok dj jgs gSA LoHkko Hkh vPNk gSA buesa fo}rk gS] fouezrk gSA ,sls lrks ds fy, 'kklu Jh lcks/ku mi;qDr gSA eqfu ftrsUnzdqekjth us fodkl fd;k gS] vkSj fodkl djuk gSA [kqc dk;Z djuk gSA fu"Bk ds lkFk vkxs c<+uk gSA

eksg psruk dk de djus lqu exy ikB

vkpk;Z Jh egkiz K us dgk fd eksg ls eqDr gksus ds fy, vkSj vkRek dh 'kqf) ds fy, /keZ dh lk/kuk djsA Lo;a dh vkRe'kqf} djs vkSj nwljksa dh vkRe'kqf) dk iz;kl djs ;g /keZ gSA gekjs NksVs lar gS] mUgksaus ykp djok;k gSA ykp djuk dfBu dke gSA eksg ftldk de gksrk gS ogh ykp djok ldrk gSA mUgksaus dgk fd ti djrs gS] exyikB lqurs gS] mldk viuk iHkko gSA exyikB Hkh blfy, lqu fd gekjh eksg psruk de iMsA eksg psruk dks detksj djuk lk/kuk dk eq[; y{; gksuk pkfg,A vkxe vkfn dk Lok/;k; eksg dh psruk dks detksj djus dk mik; gSA